हिन्दी

(स्पर्श) (पाठ 13)(रामधारी सिंह दिनकर– गीत–अगीत)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1 :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क).

नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है ? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर क:

देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।

(ख).

जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर ख :

जब शुक डाल पर बैठकर गाता है तब शुकी नीचे घोंसले में बैंठकर अंडे सेती हुई उसके स्वर को सुनकर अपने मन में प्रसन्न होती है । शुक के गाने का सीधा प्रभाव शुकी के मन पर पड़ता है ।

(ग).

प्रेमी जब गीत गाता है, तब प्रेमिका की क्या इच्छा होती है ?

उत्तर ग :

प्रेमी जब सॉझ ढले आल्हा गाता है तो दूर अपने घर में बैठी उसकी प्रिया को उसका स्वर बरबस ही खींच लाता है और पेड़ की छाया में छिपकर गीत सुन रही प्रिया का यही मन करता है कि काश मैं भी अपने प्रिय के गीत की कड़ी होती ।

(घ).

प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति–चित्रण को लिखिए।

उत्तर घ :

प्रथम छंद में कवि ने नदी को मानवीकरण रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके बहने को उसके मन की बात के रूप मे रखा है । उसका मानना है कि मानो नदी बहते हुए अपने किनारों से बात करती हुई चलती है और वहीं उसके किनारे पर खिला गुलाब भी मन ही मन यही सोचता है कि यदि मुझे भी स्वर मिलते तो मैं भी अपने सपनों के गीत लोगों को गा–गाकर सुनाता ।

(ड).
प्रकृति के साथ पशु–पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए।
उत्तर ड :
कवि का कहना पशु–पक्षियों के द्वारा मानो प्रकृति स्वयं ही गीत गाती है गुनगुनाती है । और उनके ही माध्यम से मानो लोगों को अपने संदेश देने की कोशिश करती है ।

(च).
मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है ? अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर च :
मनुष्य को प्रकृति हर रूप में आंदोलित करती है चाहे वह नदी का बहना हो , झरने का गिरना हो , पक्षियों का चहचहाना हो या फिर अपने हर–भरे रूप से प्रभावित करती है । इसी प्रकार वह अपने हर रूप में किसी न किसी प्रकार से हर बार नया संदेश देती है ।

(छ).
सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर छ :
जो गाया गया है वह गीत है ओर जिसे गाया जाना है वह अगीत है । प्रकृति या मनुष्य की भावनाएं जब मूर्त रूप ले लेती हैं तो वह गीत बन जाता है और मूर्त रूप लेने के लिए प्रस्तुत भावनाएं अगीत रूप में हमारे सामने रहती हैं ।

(ञ).
'गीत–अगीत' के केंद्रीय भाव को लिखिए।
उत्तर ञ :
'गीत–अगीत' के द्वारा कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि प्रकृति में होने वाली हर धटना और हमारे अंदर की भावना और संवेदना किसी न किसी रूप में एक दूसरे को प्रभावित करती हैं और यही प्रभाव कभी गीत के रूप में तो कभी अगीत के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है ।

प्रश्न 2 :

संदर्भ–सहित व्याख्या कीजिए

(क)

अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता ;

उत्तर क :

प्रस्तुत पंक्तियों में गुलाब भी सोचते हुए कहता है कि यदि मुझे भी स्वर मिल जाते तो मैं भी अपने सपनों तथा अपने सुख–दुख को इस दुनिया के सामने शब्द रूप में सबके सामने रखता ।

(ख).

गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर ;

उत्तर ख :

जब ऊँची डाल पर बैठकर शुक अपने स्वर में गीत गाता है तब ठंडी बसंती हवा मिठास के साथ शुकी के अंतर्मन को आल्हादित करती है ।

(ग).

हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना यों मन में गुनती है

उत्तर ग :

प्रस्तुत पंक्तियों में एक प्रेमिका अपने प्रिय को आल्हा गाते हुए देखकर अपने मन में यह सोचती है कि यदि मैं भी इस गीत की कड़ी होती तो मेरा हृदय भी पूरे उत्साह से भर जाता ।